Q. अशोक के धम्म-नीति की विवेचना करें।

Ans: सम्राट अशोक के धम्म नीति को उसके व्यक्तिगत धर्म के साथ सम्बद्ध कर उसे एक बौद्ध-प्रचारक के रूप में देखने की प्रवृति रही है। पर जैसा कि अभिलेखों से स्पष्ट है वह अपने व्यक्तिगत धर्म एवं धम्म नीति में फर्क करता था। उसकी धम्म नीति तत्कालीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में सामाजिक समस्याओं के समाधानार्थ "सहिष्णुता, अहिंसा एवं लोककल्याण" पर आधारित एक सामाजिक आचरण संहिता थी, जो राज्य नीति के रूप में प्रतिफलित हुई।

धम्म नीति के प्रतिपादन की आवश्यकता तत्कालीन आर्थिक-सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट होती है। मौर्यकाल में अर्थव्यवस्था में जो संरचनात्मक परिवर्तन हुए उससे समाज में विभिन्न नवीन वर्गों का उदय हुआ। आर्थिक त्वरण हेतु सामाजिक सामंजस्य की आवश्यकता थी। व्यापारिक वर्ग वर्णव्यवस्था में निम्न स्थान पाकर असंतुष्ट था। निम्न वर्ण एवं वैश्य वर्ग हेतु बौद्धमत एक उपयुक्त विकल्प था। इन सबको मिलाकर समाज में तनाव व्याप्त था। मगध के साम्राज्यवादी उभार से इसके अंतर्गत कई प्रकार के भौगोलिक, सांस्कृतिक क्षेत्र, धर्म विचार एवं परम्पराएं आ गई थी। राज्य व्यवस्था की जटिलता के कारण सम्राट अशोक को एक सृजनात्मक नीति का निर्माण करना आवश्यक प्रतीत होने लगा। इन असमान तत्वों में एक तत्व और भी था उत्तर-पश्चिमी सीमा पर पर्याप्त संख्या में विदेशी जनसंख्या बसी हुई थी। तक्षशिला जो कि मौर्य प्रांत की राजधानी थी, भारतीय एवं यूनानी विचारों का सम्मिश्रण स्थल था। इसके अतिरिक्त साम्राज्य के कई अन्य जनजातीय या आदिवासी क्षेत्रों में ब्राह्मणवाद या सनातनी धर्मों का प्रभाव नहीं था।

इन परिस्थितियों में अशोक के समक्ष दो विकल्प थे या तो सैन्य शक्ति द्वारा साम्राज्य पर नियंत्रण स्थापित रखना जो अधिक व्यय साध्य, श्रमसाध्य और सम्भवतः अव्यवहारिक भी था दूसरा सर्वमान्य आस्था के आधार पर जनता को एकसूत्र में बांधना। अशोक ने दूसरे विकल्प को चुना। अशोक की धम्मनीति इसी परिप्रेक्ष्य में सामाजिक समस्याओं के समाधानार्थ व्यक्तिगत विवेक से प्रतिपादित की गई थी। मौर्य शासकों की प्रगतिशीलता एवं विवेकशीलता इस बात से झलकती है कि उन्होंने नवीन विचारों को आत्मसात किया। चन्द्रगुप्त जैन मत में विश्वास करता, बिंदुसार को आजीविक सम्प्रदाय में रुचि थी। अशोक ने भी अपने निजी जीवन में

Scanned with CamScanner

बौद्ध मत को स्वीकार किया किंतु अपने व्यक्तिगत धर्म को जनता पर थोपने का प्रयास नहीं किया।

धम्म के सिद्धांत इस प्रकार प्रतिपादित किये गये थे कि वे सभी समुदायों एवं धर्मावलम्बियों के लिए स्वीकार्य हो। धम्म नीति के अन्तर्गत 'पितृत्ववाद' एवं 'कल्याणकारी राज्य' की अवधारणा पर बल दिया गया था। धार्मिक सहिष्णुता, अहिंसा आचार संहिता तथा जनकल्याण इसकी मुख्य विशेषताएँ थी।

अशोक की धम्मनीति ने 'दूसरे सहिष्णुता' की बात की जिसमें जनसामान्य के मध्य आत्मसहिष्णुता के साथ-साथ विभिन्न विचारों एवं आस्थाओं के मध्य सहिष्णुता का भाव था। इसने ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति आदर भाव रखने का आदेश दिया। अशोक इस बात को भलीभाँति समझता था कि वैचारिक विभिन्नता को दूर करके ही आम सौहार्दता हासिल किया जा सकता है। इसने उत्सवों जमघट पर प्रतिबंध लगा दिया ताकि किसी भी तरह का सामाजिक तनाव का वातावरण पैदा न हो सके।

"अहिंसा" अशोक के धम्मनीति की मूलभूत विशेषता थी। अहिंसा का तात्पर्य था युद्ध तथा हिंसा द्वारा विजय प्राप्ति का त्याग एवं जीवहत्या का निरोध। अशोक एक शिलालेख में खुद कहता है कि वह युद्ध से नहीं बल्कि धम्म से विजय प्राप्त करेगा। एक दूसरे शिलालेख में वह जानवरों की हत्या पर प्रतिबंध लगाता है। दिलचस्प बात है कि एक अन्य अभिलेख में वह उन जानवरों की सूची देता है जिनका वध किया जा सकता था। अशोक के आधी भोजनालय में पकने वाले दो मोर एवं एक हिरण इस बात के प्रमाण है कि अशोक की अहिंसक नीति चयनित तौर पर थी। वस्तुतः अशोक अवैचारिक पशुवध के खिलाफ था। वह उन जानवरों के वध के खिलाफ था जिनका प्रयोग कृषि-कार्यों में होता था। मृत्युदंड को समाप्त न किया जाना, सीमाप्रांत के जनजातियों पर बल-प्रयोग करने की छूट आदि जैसी बातें अशोक के पूर्ण अहिंसक साबित करने से रोकते है। जहाँ तक युद्ध पर प्रतिबंध की बात है कलिंग विजय पश्चात मौर्य साम्राज्य का क्षेत्रीय प्रसार अपने चरम शिखर पर पहुँच चुका था, अतः अब विशाल साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता थी न कि साम्राज्य विस्तार क्योंकि साम्राज्य के अंदर विद्रोह की सारी संभावनायें विद्यमान थी जिसे सामाजिक एवं आर्थिक उलझनें और बलवती बनाती थी।

अशोक के "आचार संहिता" संबंधी

Scanned with CamScanner

नीति में दूसरों के प्रति सहिष्णुता मुख्य बात थी जिसमें माता-पिता बंधु-बांधव, मित्र-साथी, मालिक-नौकर आदि के प्रति सद्‌विचार एवं श्रद्धा की भावना थी। अशोक ऐसा इसलिए चाहता था कि जनजातीय जीवन धीरे-धीरे पतोन्मुख थी और ऐसे संक्रांति-काल में सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को समृद्ध करने की आवश्यकता थी।

अशोक के धम्म के अन्तर्गत बहुत से ऐसे जनकल्याणकारी कार्य थे जो आधुनिक लोककल्याणकारी राज्य-सिद्धांत के अन्तर्गत आते हैं। अशोक सारी प्रजा को अपनी संतान (पृथक कलिंग शिलालेख) मानता था और इसीलिए उसने उनके सुखद जिंदगी की उत्तरदायित्व ली। इसी प्रेरणा से अभिभूत होकर उसने बहुत सारे सड़कें निर्मित किए, सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाये, कुएँ खुदवाया, मुसाफिरखाना तथा अस्पतालों का निर्माण करवाया। उसके जनकल्याणकारी कार्यों का उद्देश्य यह था कि उसकी प्रजा धम्म के अनुसार आचरण करें।

इस प्रकार सम्राट अशोक ने युद्धघोष के स्थान पर धम्मघोष की नीति अपनाई और उसे आंतरिक ही नहीं बल्कि विदेश नीति में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। धम्म नीति के प्रचारार्थ उसने बहुस्तरीय प्रयास किये। अशोक ने सर्वप्रथम स्वयं धम्म के सिद्धांतों के आधार पर आचरण करना शुरू किया। धम्म के सिद्धांतों को औपचारिक रूप से संरचनाबद्ध नहीं किया गया था लेकिन अशोक ने जनता तक अपने संदेश पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थलों पर अभिलेख खुदवाये जिसमें क्षेत्रीय लिपियों का ख्याल रखा गया। धम्म युक्तों तथा धम्म महामात्रों की नियुक्ति एवं उन्हें व्यापक अधिकार प्रदान करना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। धम्म प्रचार हेतु उसने मिस्र, श्रीलंका, यूनान आदि देशों में राजदूत भेजे।

कतिपय इतिहासकार अशोक की धम्म नीति को बौद्ध धर्म से जोड़कर देखा है लेकिन जैसा कि उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है यह बौद्ध धर्म का प्रतिरूप नहीं था। अशोक के धम्म में न तो किसी देवता का न ही किसी धार्मिक ग्रंथ का जिक्र है। यह न तो किसी कर्मकांड को प्रश्रय देता है और न ही किसी निर्वाण की बात करता है। अशोक की अहिंसक नीति तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक सच्चाइयों के मद्देनजर एक उचित कदम था जिसमें बल और हिंसा का समय रहते उपयोग करने की छूट शामिल थी।

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त अहिंसा की नीति पर उस समय बौद्ध-धर्म का ही एकाधिकार न था। जैन-धर्म भी इससे उतना ही जुड़ा था जितना कि बौद्ध धर्म। और यदि ऐसा होता तो अशोक धम्म नीति के प्रचार के लिए संघीय नियमों का पालन करता। धम्म नीति में बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की अनुपस्थिति भी इस बात को गलत सिद्ध करती है।

अशोक के धम्म नीति का प्रभाव भी बहस का मुद्दा है। इतिहासकार यह मानते हैं कि अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म नीति अपने उद्देश्यों में विफल रही एवं अशोक के साथ ही समाप्त हो गई लेकिन इस प्रश्न का उत्तर तलाशने के लिए हमें इसके मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखना होगा जिसके कारण इसे प्रतिपादित किया गया था। यह वास्तव में अशोक के अपने आदर्शों की उपज थी तथा यह उस ध्येय को पूर्णतया प्राप्त किया जिसके चलते इसे प्रतिपादित किया गया था।

Scanned with CamScanner